स्मृति संकल्प यात्रा और ज्यादा उत्साह के साथ देश के विभिन्न हिस्सों में जारी...

पिछले वर्ष 23 मार्च को भगत सिंह और उनके साथियों के 75 शहादत वर्ष के आरम्भ पर शुरू की गई स्मृति संकल्प यात्रा के तहत देश के विभिन्न क्रान्तिकारी संगठन पिछले डेढ़ वर्षों से भगत सिंह के उस सन्देश पर अमल कर रहे हैं जो उन्होंने जेल की कालकोठरी से नौजवानों को दिया था; कि छात्रों और नौजवानों को ज़रूरत है कि वे क्रान्ति की अलख लेकर गाँव-गाँव, कारखाना-कारखाना, शहर-शहर, गन्दी झोपड़ियों तक जाना होगा। इस अभियान के दौरान इन जनसंगठनों ने जो भी जनकार्रवाइयाँ की हम उसका एक संक्षिप्त ब्यौरा यहाँ दे रहे हैं। जिन इलाकों में अभियान की टोलियों ने मुहिम चलाई उनमें उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर, नोएडा, ग़ाज़ियाबाद, हापुड़; उत्तरांचल में रुद्रपुर, ऊधमसिंहनगर, हल्द्वानी; पंजाब में जालंधर, लुधियाना आदि जैसे शहर और साथ ही पूरा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र भी शामिल है। इनमें से कुछ स्थानों की अभियान सम्बन्धी रिपोर्टें हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

-सम्पादक

उत्तरी, उत्तरी-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी दिल्ली भगतसिंह के क्रान्तिकारी नारों से गूँजा

दिल्ली। शहीदे-आज़म भगतसिंह के 75वें शहादत वर्ष (23 मार्च, 2005) से शुरू हुई "स्मृति संकल्प यात्रा" के तहत **दिशा छात्र संगठन** और **नौजवान भारत सभा** ने जगह-जगह पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, साईकिल रैली, नुक्कड़ सभाएँ कीं व ट्रेनों, बसों, ऑफिसों और घर-घर जाकर घनीभूत जनसम्पर्क अभियान चलाया। शहीदों के अधूरे सपनों और विचारों की स्मृति को जगाने का संकल्प लेकर निकली छात्र-नौजवान की इस टोली को लोगों का व्यापक समर्थन और सहयोग मिल रहा है।

रोहिणी, दिल्ली में दिशा व नौभास द्वारा मशाल जुलूस

इस यात्रा के तहत टोली ने शहीदों के शहादत वर्ष व ऐतिहासिक दिवसों पर कई कार्यक्रम आयोजित किए। शहीद भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव के 76वें शहादत वर्ष(23 मार्च, 2006) पर **दिशा** और **नौभास** की संयुक्त टोली ने दो दिन का विशेष अभियान लिया। अभियान के तहत टोली उत्तर-पूर्वी दिल्ली से साईकिल रैली और नुक्कड़ सभाएँ करती हुई उत्तर-पश्चिमी दिल्ली तक गई। इस अभियान की शुरुआत करावल नगर इलाके में प्रभात फेरी से हुई। यहाँ के लोग **नौभास** व **दिशा** से परिचित हैं, इसलिए जैसे ही नौजवानों का टोली गलियों में आयी, लोग घरों से बाहर निकल आये और यात्रा के सदस्यों द्वारा गाये जा रहे क्रान्तिकारी गीतों को ध्यान से सुना और नौजवानों के इस प्रयास की सराहना की। अभियान में आगे की यात्रा साईकिल से **दयालपुर, शेरपुर चौक** और **भजनपुरा, वजीराबाद** के चौराहों पर नुक्कड़ सभाएँ करते हुए शाम को **तिमारपुर** पहुँची। यहाँ एक सांस्कृतिक नुक्कड़ सभा आयोजित की गई। सभा में शहीद भगतसिंह की तस्वीर पर फूल माला चढ़ाते हुए **दिशा** और **नौभास** के सदस्यों ने शहीदों के सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया। इस शपथ ग्रहण में वहाँ के कई निवासी भी शामिल हुए। यहाँ से आगे बढ़ते हुए टोली **दिल्ली विश्वविद्यालय** के **पटेल चैस्ट, विजयनगर, कैम्प, मॉडल टाउन, गुजराँवाला टाउन, आजादपुर, आदर्शनगर, जहाँगीर पुरी, बाईपास** होते हुए **रोहिणी** पहुँची। पूरी यात्रा में नुक्कड़ सभाओं का सिलसिला जारी रहा। 24 मार्च को रोहिणी के अलग-अलग सेक्टरों में साईकिलों पर प्रभात-फेरी निकाली गई, इस दौरान कई नागरिकों

ने टोली को रोककर इस यात्रा के बारे में जानना चाहा और आज के समय में नौजवानों द्वारा किये जा रहे इस प्रयास को सराहनीय बताया। दोपहर में साईकिलों पर निकले **दिशा** और **नौभास** की टोली **रोहिणी** के प्रमुख नुक्कड़-चौराहों पर सभाएँ करती हुई शाम को **सेक्टर-15** के पार्क में पहुँची जहाँ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम और मशाल जुलूस का आयोजन किया गया। *आ गये यहां जवाँ कदम*, और ये *फैसले का वक्त है* जैसे क्रान्तिकारी गीतों की प्रस्तुति की गई। **दिशा** के अभिनव ने कहा की शहीदों के विचारों को जाने बिना समाज परिवर्तन की लड़ाई असम्भव है। उनके विचार आज की निराशा के दौर में पराजय बोध को समाप्त कर नई उम्मीदें, और नये सपने देखने की प्रेरणा देते है। **दयित्वबोध मंच** के सत्यम ने कहा कि भगत सिंह को सिर्फ एक महान क्रान्तिकारी के रूप में ही नहीं बल्कि उनके विचारों के रूप में जानना भी ज़रूरी है। **दिशा** की लता ने.अपने विचार रखते हुए कहा कि महिलाओं की मुक्ति भी उसी समाज में सम्भव है जिसका सपना भगतसिंह और उनके साथियों ने देखा था। कार्यक्रम के अन्त में यात्रा के सदस्यों ने हाथ में जलती मशाल लेकर शपथ ली की वे शहीदों के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिये क्रान्ति के सन्देश को देशभर में ले जायेंगे। इसके बाद इस पूरे इलाके में एक मशाल जुलूस निकाला गया। कार्यक्रम देखने आए कई नौजवानों ने शहीदों के प्रति अपनी भावनाओं को इस जुलूस में हिस्सा लेकर व्यक्त किया।

रोहिणी के सार्वजनिक पार्क में शपथ ग्रहण और मशाल जुलूस के पहले क्रान्तिकारी गीतों की प्रस्तुति

दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में घनीभूत जनसम्पर्क अभियान जारी रखते हुए **दिशा** और **नौभास** ने एक मई को **करावल नगर** के **पांचाल विहार, कमल विहार**, और **प्रकाश विहार** जैसी मज़दूर कॉलोनियों में साईकिल रैली निकाली और नुक्कड़ सभाएँ की और इसके माध्यम से **मई दिवस** की विरासत और वर्तमान समय की चुनौतियों पर चर्चा करते हुए मेहनतकश आवाम से फ़ौलादी एकता कायम करने का आह्वान किया।

इसी महीने की **10 मई** को **1857 के विद्रोह** की 150वीं वर्षगाँठ पर **दिशा** और **नौभास** की संयुक्त टोली ने **मुस्तफाबाद, गोविंद विहार, रोशन विहार, रामा गार्डन** और **शिव विहार** इलाके में कई नुक्कड़ सभाएँ की। इन सभाओं में जुटे लोगों की भारी भीड़ यह साबित करती है कि लोग अपने शहीदों और उनके संघर्षों को भूले नहीं है। इस दौरान कई नौजवानों ने भी इस यात्रा से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की।

इस यात्रा के तहत **दिशा** और **नौजवान भारत सभा** ने दिल्ली में **शिक्षा निदेशालय, खाद्य विभाग** और **रेल दावा प्राधिकरण** के कार्यालयों में जाकर कर्मचारियों के बीच स्मृति संकल्प यात्रा का पर्चा वितरित किया गया । इन लोगों ने यात्रा को अच्छा प्रयास बताते हुए अभियान के लिए सहयोग भी किया। **नौजवान भारत सभा** और कई नये तरीकों से इस अभियान को और घनीभूत रूप से चलाने का प्रयास कर रहा है। **नौभास** के सदस्य प्रतिदिन एकदम सुबह-सुबह साईकिल पर क्रान्तिकारी गीत गाते हुए तमाम मोहल्लों में जाते है, वहाँ नुक्कड़ सभाएँ करते है। भगतसिंह के विचारों व सपनों को घर-घर तक पहुँचाने में लगी इस टोली के इस अनूठे प्रयास और प्रतिबद्धता पर, लोग आश्चर्यमिश्रित हर्ष के साथ स्वागत और भरपूर सहयोग कर रहे है।

ग़ाज़ियाबाद में नौभास द्वारा कार्यक्रम

ग़ाज़ियाबाद। नए जनमुक्ति संघर्ष की तैयारी के संकल्प और संदेश के साथ क्रांतिकारी छात्रों, युवाओं, बुद्धिजीवियों द्वारा शुरू की गई स्मृति संकल्प यात्रा के तहत नौजवान भारत सभा ने शहीद भगवतीचरण बोहरा के 77 वें शहादत वर्ष पर **प्रेस क्लब, गाजियाबाद** में विचार गोष्ठी का आयोजन किया।

नौजवान भारत सभा के तपीश ने बताया कि स्मृति संकल्प यात्रा की कड़ी में शहीद भगवतीचरण बोहरा जिनका 77वां शहादत वर्ष 28 मई 2006 से शुरू होने वाला है, **नौजवान भारत सभा** के कार्यकर्ता विभिन्न मोहल्लों, ऑफिसों में अभियान चलाकर व्यापक जनसम्पर्क करेंगे व पुस्तक एवं पोस्टर प्रदर्शनियों के जरिये उनके विचारों को व्यापक आबादी तक पहँचाने का प्रयास करेंगे। इस शहीद सप्ताह का अन्त 28 मई को प्रभात फेरियों के आयोजन पर होगा।

गोष्ठी का आरम्भ **नौजवान भारत सभा** की गायन टोली द्वारा *'शहीदों के लिए'* गीत से की गई। इस मौके पर शहीद भगवतीचरण बोहरा, भगतसिंह, राहुल सांकृत्यायन, ब्रेष्ट, मुक्तिबोध आदि क्रान्तिकारियों के उद्धरण, कवितांश आदि की आकर्षक

पोस्टर प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसे श्रोताओं एवं दर्शकों ने काफी सराहा और नई ऊर्जा पाई। क्रान्तिकारियों की जीवनी, भगतसिंह एवं भगवतीचरण बोहरा का मशहूर लेख **क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा, बम का दर्शन** और भगतसिंह के संपूर्ण उपलब्ध *दस्तावेज पुस्तक विशेष आकर्षण रहे।*

गोष्ठी की अध्यक्षता **श्री चरण सिंह शाण्डिल्य** ने की। उन्होंने अपने वक्तव्य में **नौजवान भारत सभा** के इस प्रयास की सराहना की और उपस्थित नौजवानों को इसके लक्ष्य एवं बिचार की उदात्तता को आत्मसात करने की अपील की।

गोष्ठी की संचालन राकेश कुमार ने किया। उन्होंने बड़ी कुशलता से अपनी ज़िम्मेदारी निभायी और सभी उत्सुक वक्ताओं को मौका दिया।

गोष्ठी में बोलते हुये सन्दीप ने बताया कि किस तरह क्रान्तिकारी आन्दोलन ने चापेकर बंधुओं से होते हुए अनुशीलन, गदर पार्टी और हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी तक की विचार यात्रा तय की। उन्होंने शहीद भगवतीचरण बोहरा और भगतसिंह को उद्धृत करते हुए कहा कि "क्रान्ति पूंजीवाद, वर्गवाद तथा कुछ लोगों को ही विशेषाधिकार दिलाने वाली प्रणाली का अन्त कर देगी। यह राष्ट्र को अपने पैरों पर खड़ा करेगी, उससे नवीन राष्ट्र और नये समाज का जन्म होगा। क्रान्ति की सबसे बड़ी बात तो यह होगी कि वह मजदूर तथा किसानों का राज्य कायम कर उन सब सामाजिक, आवांछित तत्वों को समाप्त कर देगी जो देश की राजनैतिक शक्ति को हथियाये बैठे हैं।"

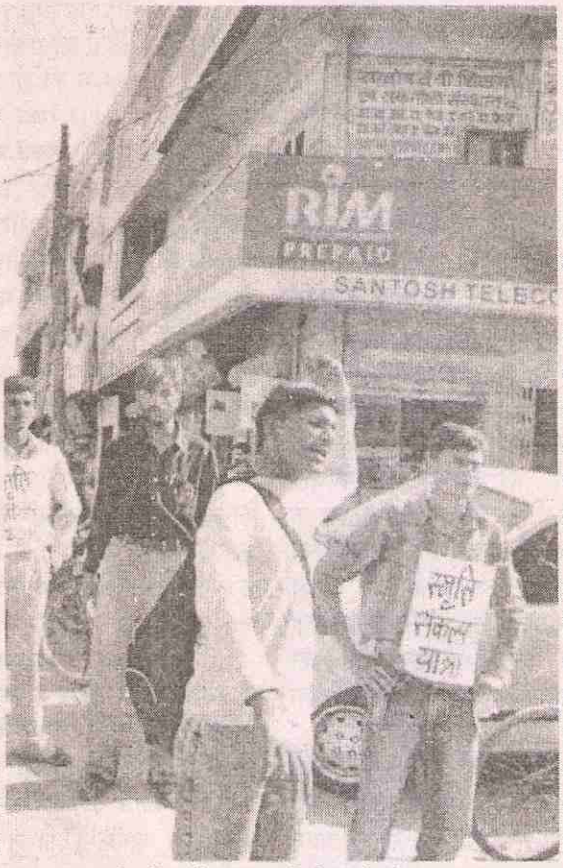

करावलनगर क्षेत्र में साईकिल जुलूस के दौरान हो रही एक नुक्कड़ सभा

श्याम और देवेन्द्र ने अपनी बात में देश के सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनैतिक गतिरोध और बर्बर होते शासन तंत्र की कलई खोल कर रख दी। उन्होंने कहा कि देश के सत्ताधारियों ने देश के भीतर जनता के *खिलाफ़ एक युद्ध छेड़ रखा है। उन्होंने नौजवानों को जनता का* पक्ष चुनने के लिए ललकारा। उन्होंने उस नौजवानी को व्यर्थ का बताया जो समाज के वैषम्य को देखकर भी अनजान बनी है। जो माताओं और बहनों के खिंचते आँचलों पर भी चुपचाप बैठी देखती रहती है।

अन्त में **नौजवान भारत सभा** के तपीश ने इस बात पर ज़ोर देते हुए कहा कि सवाल सिर्फ शासन-सत्ता के जनद्रोही चरित्र का ही नहीं है, सवाल है कि इसका विकल्प तैयार किया जाये। उन्होंने भगतसिंह और भगवतीचरण बोहरा के उस संदेश को पढ़ा जो उन्होंने नौजवानों को संबोधित किया था, **"आज देश के नौजवानों को क्रान्ति का संदेश, फैक्ट्रियों, खेतों-खलिहानों तक लेकर जाना होगा।"**

उनका कहना था कि आज नौजवानों को शहीदों की इस हिदायत पर अमल करने की जरूरत है। आज ज़रूरत है कि सत्ता द्वारा शहीदों के सपनों को भुला देने के तमाम कोशिशों के विरुद्ध छात्र नौजवान एकजुट हो जायें। नौजवानों को अपने मृत्युंजय पुरखों को याद करना ही होगा तभी भविष्य उज्जवल हो सकता है।

नौजवानों के भविष्य को राहूकेतु की तरह ग्रस लेनी वाली शक्ति असल में पूँजीवाद की कोख में जन्म ले रही है इसलिए असली सवाल एक मानव-केन्द्रित व्यवस्था के निर्माण का है। मानव की नैसर्गिक और उसकी मानवीयता को बचाने का है।

उन्होंने बताया कि किस तरह **नौजवान भारत सभा** के कार्यकर्ता झुग्गी-बस्तियों के काम कर रहे हैं। वहां मज़दूरों के बच्चों को पढ़ाने, स्वास्थ्य शिविर लगाने, फैक्ट्री मालिकों के जुल्म के ख़िलाफ़ लामबन्द करने, अपने अधिकारों के प्रति सचेत करते, पठन-पाठन की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए लाइब्रेरी चलाने, क्रान्तिकारी साहित्य की पुस्तक प्रदर्शनियाँ, पोस्टर प्रदर्शनियाँ या फिर नुक्कड़ नाटक और क्रान्तिकारी समूहगान टोलियों के जरिये शहीदों के विचारों को कोटि-कोटि जनता तक पहुँचाने का काम कर रहे हैं।

गोष्ठी का अन्त आज के समय की जटिलताओं और परिवर्तनकामी शक्तियों की दृढ़ आस्था को स्वर देने वाले गीत से हुआ—*दुनिया के हर सवाल के हम ही जवाब है। आँखों में हमारी नई दुनिया के ख़्वाब है।*

चन्द्रशेखर आज़ाद अमर रहेंगे, हम सबके संकल्पों में

इलाहाबाद। अपने क्रान्तिकारी पुरखों की याद को बेजान सालाना कर्मकाण्ड में बदले जाते देखने से अधिक त्रासद कुछ नहीं। इस त्रासदी के रचयिता आज़ाद हिन्दुस्तान के सत्ताधारी ही नहीं हैं बल्कि कई वे ताक़तें भी हैं जो खुद को भगतसिंह,

चन्द्रशेखर आज़ाद का स्वयंभु वारिस घोषित करती हैं। इन क्रान्तिकारी पुरखों की स्मृति को इस त्रासद नियति के कैदखाने से बाहर निकालने की कोशिश के तहत चन्द्रशेखर आज़ाद की शहादत की 75वीं वर्षगाँठ (27 फरवरी) पर स्मृति संकल्प यात्रा के अन्तर्गत दिशा छात्र संगठन और नौजवान भारत सभा के कार्यकर्ताओं ने अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में आज़ाद के शहादत स्थल पर उनकी प्रतिमा के समक्ष हर कुर्बानी देकर उनके अधूरे सपानों को पूरा करने के लिए पूँजीवाद-साम्राज्यवाद-विरोधी जनक्रान्ति के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने की शपथ ली।

दोनों संगठनों के कार्यकर्ताओं ने शपथ ली कि वे क्रान्तिकारी शहीदों के नकली वारिसों द्वारा छात्र-युवा आन्दोलन को सुधारवाद-संसदवाद के दलदल में धँसा देने की कोशिशों का लगातार भण्डाफोड़ करते हुए जनक्रान्ति की मशाल को प्रज्ज्वलित करेंगे जिससे क्रान्ति की स्पिरिट ताज़ा हो और इंसानियत की रूह में हरकत पैदा हो।

आज़ाद के शहादत स्थल पर पहुँचकर शपथ लेने से पूर्व इलाहाबाद के विभिन्न कालोनियों, मुहल्लों में प्रभात फेरियाँ निकाली गईं। उसके बाद कार्यकर्ता हाथों में नारे लिखी तख्तियाँ लिये जुलूस की शक्ल में शहादत स्थल पर पहुँचे। तख्तियों पर 'चन्द्रशेखर आज़ाद अमर रहेंगे, हम सबके संकल्पों में', 'आज़ाद का सपना आज भी अधूरा, छात्र और नौजवान उसे करेंगे पूरा', और 'पूँजीवाद-साम्राज्यवाद का नाश हो', 'इंक़लाब ज़िन्दाबाद' आदि नारे लिखे हुए थे। शपथ के बाद आज़ाद की प्रतिमा के निकट पार्क में उपस्थित जनसमुदाय के बीच 'हवाई गोले' उर्फ 'देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच' नामक नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। यह व्यंग्य नाटक संसदीय जनतंत्र की पतनशीलता को उजागर करते हुए क्रान्तिकारी विकल्प का निर्माण करने का आह्वान करता है। दोपहर में महालेखा परीक्षक कार्यालय के कर्मचारियों के समक्ष नाटक की एक और प्रस्तुति की गई।

शाम के समय कर्नलगंज तिराहे पर छात्रों की भारी भीड़ को सम्बोधित करते हुए एक आम सभा भी हुई जिसके बाद मशाल जुलूस निकाला गया। आम सभा में स्मृति संकल्प यात्रा के कार्यकर्ताओं ने छात्रों-नौजवानों से पूँजीवाद-साम्राज्यवाद विरोधी नयी जनक्रान्ति के लिए आगे आने का आह्वान किया। वक्ताओं ने सुधारवादी और संसदमार्गी दलों-संगठनों के चुंगल से बाहर निकलकर नये क्रान्तिकारी छात्र-युवा संगठनों के निर्माण के लिए ललकारा।

गोरखपुर में भी सघन जन सम्पर्क अभियान और गोष्ठियों का आयोजन

गोरखपुर। चन्द्रशेखर आज़ाद के 75वें शहादत दिवस पर स्मृति संकल्प यात्रा के अन्तर्गत दिशा छात्र संगठन और नौजवान भारत सभा ने संयुक्त रूप से एक पखवारे तक विभिन्न आयोजन किये। गोरखपुर विश्वविद्यालय के कला संकाय व विधि संकाय और सेण्ट एण्ड्रूज़ महाविद्यालय में नुक्कड़ नाटकों के मंचन के अलावा विश्वविद्यालय परिसर में केन्द्रीय ग्रन्थालय के निकट तीन दिवसीय पोस्टर एवं क्रान्तिकारी साहित्य की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

21 फरवरी को विश्वविद्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार के सामने स्थित पन्त पार्क में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'क्रान्तिकारियों की विरासत और नौजवानों का रास्ता'। दोनों संगठनों के कार्यकर्ताओं का एक जत्था 27 फरवरी को इलाहाबाद में होने वाले कार्यक्रम में शिरकत करने के लिए भी ट्रेन के जरिये पहुँचा। ट्रेन के मुसाफिरों के बीच भी कार्यकर्ताओं ने व्यापक प्रचार व पर्चा वितरण किया।

इसके बाद गोरखपुर की नौभास व दिशा की इकाई ने 23 मार्च से दो दिनों का एक सघन कार्यक्रम लिया। भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव की शहादत के 76वें वर्ष की शुरुआत पर 23 मार्च को गोरखपुर रेलवे स्टेशन से एक जुलूस निकाला गया जो शहर के विभिन्न हिस्सों से होता हुआ बेतियाहाता चौराहे पर पहुँचा। वहाँ भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया और एक शपथ ग्रहण समारोह हुआ जिसमें छात्रों और नौजवानों की टोलियों ने भगत सिंह और उनके साथियों के सपनों को पूरा करने की शपथ ली। इसके बाद शाम को गोरखपुर के बिछिया जंगल तुलसी राम नामक इलाके में एक श्रृद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। वहाँ *'देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच'* नामक नाटक का मंचन हुआ जिसमें संसदीय लोकतंत्र की पोल खोली गई थी। इस नाटक को दर्शकों ने काफी सराहा। वक्ताओं ने अपनी बात रखते हुए लोगों को यह याद दिलाया कि हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन के क्रान्तिकारियों का उद्देश्य सिर्फ अंग्रेजों से आज़ादी नहीं था बल्कि हर प्रकार के शोषण से आज़ादी था। इसके बाद मुहल्ले में एक मशाल जुलूस निकाला गया जिसमें 100 से भी ज्यादा लोग शामिल थे।

24 मार्च को मर्यादपुर में देहाती मज़दूर यूनियन और नौजवान भारत सभा ने संयुक्त रूप से एक श्रृद्धांजलि सभा आयोजित की। इसमें देमयू के साथियों ने क्रान्तिकारी लोकगीत और बिरहा की प्रस्तुति की और नौभास के साथियों ने *'देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच'* का मंचन किया। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों को जनता ने खूब सराहा। वक्ताओं ने व्यापक मेहनतकश और युवा एकता की ज़रूरत पर विशेष बल देते हुए कहा कि ये तबके अलग-अलग रहकर अपना भविष्य नहीं बचा सकते।

रोहिणी, दिल्ली में नौजवान भारत सभा व जागरूक नागरिक मंच द्वारा विचार गोष्ठी

21 अप्रैल को रोहिणी सेक्टर 18 के एमसीडी के समुदायिक केन्द्र में नौजवान भारत सभा और जागरूक नागरिक मंच ने स्मृति संकल्प यात्रा के तहत भगवती चरण वोहरा की शहादत की बरसी के एक सप्ताह पूर्व एक कार्यक्रम शुरू किया। शुरुआत एक विचार गोष्ठी से हुई। गोष्ठी का विषय था 'क्रान्तिकारियों के सपनों का भारत और आज का समय'। गोष्ठी का संचालन किया जागरूक नागरिक मंच के सत्यम ने। नौजवान भारत सभा के कपिल ने

सबसे पहले बात रखते हुए इस ओर लोगों क्या ध्यान दिलाया कि शहीदों का सपना सिर्फ अंग्रेज़ों से मुक्ति नहीं था। इसके बाद **नौभास** के ही जयपुष्प ने आज़ादी के खोखलेपन की बात कही जिसमें ग़रीबों के लिए सिर्फ बेरोज़गार घूमने और भूखा मरने की आज़ादी है।

आह्वान कैम्पस टाइम्स की सम्पादक कविता ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महिलाओं की मुक्ति का सवाल आम मेहनतकश जनता और निम्न मध्यम वर्ग की मुक्ति से जुड़ा हुआ है। इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज के अध्यापक डा. रामेश्वर राय ने संस्कृति पर अपनी बात रखते हुए कहा कि हमें अपने अन्दर के पितृसत्तात्मक मूल्यों से भी लड़ना होगा। साथ ही डा. राय ने उपभोक्तावादी संस्कृति से संघर्ष की ज़रूरत पर भी बल दिया। इसके बाद **नौभास** के प्रसेन ने अपनी बात रखते हुए कहा कि सपनों और इतिहास को भुलाकर कोई भी क़ौम तरक्की नहीं कर सकती। अन्त में **दिशा छात्र संगठन** के अभिनव ने विकल्प पर अपनी बात रखी। अभिनव ने कहा कि पूरे देश में आज क्रान्तिकारी जनसंगठनों का एक तानाबाना फैला देने की ज़रूरत है और उसे समन्वित करने वाली एक क्रान्तिकारी पार्टी बनाने की ज़रूरत है जो इलेक्शन नहीं बल्कि इंक़लाब के रास्ते देश में परिवर्तन करे।

कार्यक्रम की शुरुआत में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों की सांस्कृतिक टोली **विहान** दो गीत प्रस्तुत किये। पहला गीत था फैज़ अहमद फैज़ का *दरबारे वतन में जब एक दिन* और दूसरा गीत था *शहीदे के लिए*। श्रोताओं ने इन गीतों को काफी सराहा। कार्यक्रम का समापन इसी संकल्प के साथ हुआ कि हम शहीदों के सपनों को हकीकत में बदलकर रहेंगे।

नौजवान भारत सभा के नेतृत्व में चल रहा जुझारू सड़क निर्माण आन्दोलन नये चरण में पहुँचा

पिछले 6 महीने से करावलनगर के मुकुन्द विहार में चल रहा सड़क निर्माण आन्दोलन अब एक नये चरण में पहुँच गया है। इस आन्दोलन की आंशिक जीत के रूप में कुछ गलियों का निर्माण कार्य शुरू हुआ है और जहाँ पहले से निर्माण कार्य चल रहा था वह तेज़ हुआ है। बाकी गलियों के लिए नौजवान भारत सभा के आह्वान पर मोहल्ले के बाशिंदे **नौभास** के दफ्तर के सामने इकट्ठा हुए। 9 अप्रैल को हुई इस बैठक में यह फैसला लिया गया कि सांसद सन्दीप दीक्षित ने जो वायदा किया था वह कोरा वायदा साबित हुआ है। विधायक बिष्ट और पार्षद जगदीश प्रधान द्वारा दिये गए आश्वासन भी झूठे साबित हो चुके हैं। **नौभास** के आशू ने प्रस्ताव रखा कि अब एक प्रतिनिधि मण्डल को सांसद सन्दीप दीक्षित से मिलकर उन्हें यह अल्टीमेटम देना चाहिए कि अगर एक महीने के अन्दर बाकी सड़कों का निर्माण कार्य नहीं शुरू होता तो मुकुन्द विहार के निवासी **नौभास** के नेतृत्व में धरने पर बैठेंगे।

इस प्रस्ताव को निवासियों की ओर से पूरा समर्थन प्राप्त हुआ। नतीजतन, 12 अप्रैल को **नौभास** का प्रतिनिधि मण्डल सन्दीप दीक्षित से मिलने पण्डारा मार्ग पर स्थित उनके घर गया। इस प्रतिनिधि मण्डल की ओर से योगेश और अभिनव ने सांसद से बात की। इनके सवालों का सन्दीप दीक्षित के पास कोई जवाब नहीं था। **नौभास** की चेतावनी के मद्देनज़र और चूँकि वहाँ भारी संख्या में लोग मौजूद थे, इसलिए सांसद दीक्षित को यह वायदा करना पड़ा कि **नौभास** के प्रतिनिधियों को हरिजन वेलफेयर बोर्ड के कार्यालय और यमुना पर विकास प्राधिकरण के कार्यालय में सभी फाइलों और कागज़ात को देखने की अनुमति दी जाएगी। और साथ ही उन्हें जन दबाव के कारण तत्काल कनिष्ठ अभियन्ता को फोन करके यह कहना पड़ा कि वह फौरन मुकुन्द विहार की सड़कों के निर्माण कार्य की प्रगति से उन्हें अवगत कराएँ और कार्य में आने वाली किसी भी बाधा को तत्काल दूर करें। **नौभास** के आशीष ने बताया कि अगर इन आश्वासनों के बाद भी समस्याओं का त्वरित समाधान नहीं होता तो जून के दूसरे सप्ताह में सांसद सन्दीप दीक्षित के घर के सामने एक दिन का धरना दिया जाएगा।

यह इस आन्दोलन को मिलने वाली एक बड़ी सफलता थी। इस आन्दोलन से यह बार-बार साबित हुआ है कि अगर आम जन एकजुट होकर संघर्ष करें तो निश्चित रूप से उन्हें ऐसे मसलों पर सफलता मिल सकती है।

अमर शहीद भगवती चरण वोहरा

(पेज 7 से जारी)

क्रान्तिकारियों पर 'बम की पूजा' का आरोप लगाए जाने के आरोप में यह पर्चा लिखा गया था। इसमें गाँधी के प्रचारात्मक आक्रमण का जवाब देने के साथ ही अहिंसा की एक सुसंगत व्याख्या करते हुए क्रान्तिकारियों के असली उद्देश्य एवं भावी समाज की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई थी।

यहाँ यह जानकारी देना उचित होगा कि केन्द्रीय कमेटी की सहमति न मिलने पर वायसराय पर बम हमले की पूरी योजना और क्रियान्वयन भगवती चरण वोहरा द्वारा ही संचालित किया गया। वायसराय और गाँधी की वार्ता को वोहरा ने एक साम्राज्यवादी के साथ पूँजीपतियों के प्रतिनिधि की बातचीत की संज्ञा दी।

28 मार्च 1930 में भगत सिंह को छुड़ाने के लिए बम परीक्षण की एक हृदय विदारक दुर्घटना में रावी के तट पर क्रान्ति का यह प्रखर विचारक और उत्कट योद्धा बलिदान हो गया। शरीर के परखच्चे उड़ गये लेकिन अन्तिम साँस तक वह साथियों को ढाढ़स बँधाते रहे। कहीं अंग्रेज़ों को भनक न लग जाये, इसलिए उन्हें मृत्युपरान्त वहीं रावी तट पर दफ्न कर दिया गया। यहाँ तक कि उनकी पत्नी दुर्गा भाभी भी उनसे नहीं मिल पाईं। क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतना बड़ा नेता धरती की गोद में हमेशा के लिए सो गया। जिस देश और जनता के लिए उस वीर ने अपने प्राण न्यौछावर किये उनको इतनी बड़ी घटना की ख़बर तक नहीं मिली। न कोई शोक सभा, न जनाज़ा न विदाई धुन!

इसी अमर शहीद की 77वीं शहादत तिथि पर उसी तरह का सन्नाटा दिल में एक कसक पैदा करता है। तब अंग्रेज़ों का डर था लेकिन आज किसका डर है? चन्द नौजवानों को छोड़कर इन शहीदों का नाम लेने वाला नज़र नहीं आता जबकि उन्हीं कुर्बानियों की बदौलत मिली आज़ादी भोगने वाले बहुतेरे हैं। तब सोचना पड़ेगा कि क्या क्रान्तिकारियों का इंकलाबी सपना पूरा हुआ? आज यह सवाल हमारी आँखों झाँक रहा है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश और लखनऊ में स्मृति संकल्प यात्रा के तहत प्रभात फेरियाँ, मशाल जुलूस, शपथ ग्रहण और साइकिल यात्राएँ

लखनऊ। भगतसिंह! एक ऐसा नाम जो लोगों के दिलों में बसता है, जो लोगों की जुबाँ पे रहता है। महज 23 साल की उम्र फाँसी पर चढ़ने की नहीं होती। यह उम्र तो होती है जब नौजवान अपने भविष्य के सपने बुनता है, जब वह दुनिया को भरपूर जी लेने की कामना करता है। फिर ऐसा क्या था उस नौजवान में कि उसने सारी दुनिया, समस्त मानवता के दर्द को अपने सीने में उतार लिया। और मानवता की मुक्ति का सपना अपने दिल में सँजोये हुए उस नौजवान ने फाँसी के फन्दे को चूम लिया। क्या यह महज एक कोरी भावुकता थी या मात्र एक बहादुराना कार्रवाई? या इसके पीछे एक सुसंगत वैज्ञानिक चिन्तन और इतिहास दृष्टि थी?

इलाहाबाद में चंद्रशेखर आज़ाद की प्रतिमा के समक्ष शपथ ग्रहण करते नौभास व दिशा के कार्यकर्ता

सोचने की बात है कि आखिर क्यों अभी तक भगतसिंह के बहादुरी वाले पहलू को ही सबसे अधिक प्रचारित किया गया? आखिर क्यों फाँसी लगने से पूर्व जेल की कोठरी में भगतसिंह ने जो चिन्तन किया, हिन्दुस्तान की मुक्ति का जो विचार प्रतिपादित किया और उन लिखित दस्तावेज़ों को जेल से बाहर भेजा, उसे तलाशने की कोई कोशिश नहीं हुई।

इन्हीं सारे प्रश्नों से जूझते हुए, भगतसिंह के विचारों का अध्ययन करते हुए, सामाजिक कार्यों में लगे हुए नौजवानों के समक्ष यह बात उभरकर सामने आयी कि भगतसिंह एक ऐसी शख़्सियत का नाम है जो एक पूरी क्रान्तिकारी विरासत को अपने साथ लिये हुए है, जो केवल ब्रिटिश साम्राज्यवादी शोषण के खिलाफ संघर्ष करते हुए कुर्बान हो जाने वाला नाम ही नहीं है बल्कि सभी प्रकार के देशी-विदेशी शोषण और लूट के ख़ात्मे का स्वप्न देखने वाले एक विचारवान नौजवान का नाम है, जिसके पास मानवता की मुक्ति का पूरा विज्ञान व कार्ययोजना है। जिसे इस देश के शासक वर्ग ने सचेत रूप में बाहर आने से रोक रखा है।

मानवता की मुक्ति के लिए भगतसिंह द्वारा देखे गये उस सपने को जन-जन तक पहुँचा देने का बीड़ा उठाया है 'दिशा छात्र संगठन' व 'नौजवान भारत सभा' के कार्यकर्ताओं ने। इस महती ज़िम्मेदारी को अंजाम देने के लिए तीन वर्ष तक की योजना ली गयी है और इसे नाम दिया है **'स्मृति संकल्प यात्रा'**। इन तीन वर्षों तक चलने वाली यात्रा का मकसद है **भगतसिंह के विचारों को हर जीवित युवा हृदय तक पहुँचाना**। इस तीन वर्ष की यात्रा की शुरुआत 23 मार्च 2005 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान से की गयी थी। मालूम हो कि 23 मार्च 2005 को भगतसिंह की शहादत की 75वीं बरसी थी और फिरोजशाह कोटला मैदान वह ऐतिहासिक स्थल है जहाँ भगतसिंह और उनके साथियों ने **'हिन्दुस्तान सोशिलष्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन'** का गठन किया था। यात्रा का समापन 28 सितम्बर 2008 को किया जायेगा। इसी दिन भगतसिंह का जन्मशताब्दी वर्ष पूरा होगा।

उक्त दोनों संगठनों की ओर से चलाये जा रहे **'स्मृति संकल्प यात्रा'** की टोलियाँ देश के अलग-अलग हिस्सों में भगतसिंह के विचारों का प्रचार-प्रसार कर रही हैं तथा इस यात्रा में मिले हुए युवा नौजवानों को लेकर 'नौजवान भारत सभा' की इकाइयाँ गठित कर रही हैं। यात्रा के इसी क्रम में विगत 9 से 20 जून तक **'स्मृति संकल्प यात्रा'** की एक टोली ने लखनऊ के विभिन्न मुहल्लों, कालोनियों, ऑफिसों, नुक्कड़ों आदि पर व्यापक प्रचार अभियान चलाया। उल्लेखनीय है कि **'स्मृति संकल्प यात्रा'** का यह जत्था इलाहाबाद, वाराणसी, गोरखपुर होता हुआ लखनऊ पहुँचा।

लखनऊ शहर के विभिन्न स्थानों पर आयोजित सभा में वक्ताओं ने कहा कि 23 मार्च 2005 से लेकर 28 सितम्बर 2008 के बीच के इन तीन वर्षों को, एक नई क्रान्ति का सन्देश पूरे देश के जन-जन तक पहुँचाने वाली **स्मृति संकल्प यात्राओं** के

माध्यम से एक क्रान्तिकारी नवजागरण के तीन ऐतिहासिक वर्ष बना देने के लिए हम कृत संकल्प हैं और इस मुहिम में भागीदारी के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं। उन्होंने कहा कि हमें भगतसिंह और उनके साथियों के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना होगा। उनकी स्मृति से प्रेरणा लेकर, उनके विचारों के आलोक में अपने देशकाल की परिस्थितियों को समझकर नई क्रान्ति की दिशा तय करनी होगी और फिर उस राह पर आगे बढ़ना होगा।

इस यात्रा के तहत अलीगंज, सेक्टर क्यू, एस.बी.आई. कालोनी, केन्द्रांचल कॉलोनी, इन्दिरानगर ए.बी.सी. ब्लॉक, भूतनाथ मार्केट, न्यू हैदराबाद कालोनी, राजाजीपुरम, हजरतगंज आदि स्थानों पर प्रभातफेरियाँ, नुक्कड़ सभाएँ, पोस्टर प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक और व्यापक पैमाने पर पर्चा वितरण आदि कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को भगतसिंह के विचारों से परिचित कराया गया। लखनऊ में कार्यक्रम की शुरुआत शिक्षण संघ की नेता व अनुराग ट्रस्ट की अध्यक्ष कमला पाण्डेय के हाथों विश्वविद्यालय परिसर में स्थित भगतसिंह, सुखदेव व राजगुरु की प्रतिमा के माल्यार्पण के साथ हुआ।

यात्रा के इस चरण का समापन हजरतगंज में जी.पी.ओ. पार्क में स्थित **काकोरी स्तम्भ** पर मशाल जलाकर शहीदों के सपने को साकार करने की शपथ के साथ हुआ। इस शपथ ग्रहण कार्यक्रम में यात्रा टोली में शामिल युवाओं के अतिरिक्त इस यात्रा के दौरान मिले हुए युवा नौजवान व पार्क में उपस्थित युवाओं ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर आयोजित सभा में **स्मृति संकल्प यात्रा** के संयोजक अरविन्द ने कहा कि क्रान्तिकारियों का सपना साकार नहीं हो सका। एक अधूरी खण्डित आज़ादी के बाद, साम्राज्यवाद से साँठगाँठ किये हुए देशी-पूँजीवाद के ज़ालिम शासन के जुवे को ढोते-ढोते आधी सदी के अधिक समय बीत चुका है। आज़ादी और जनतंत्र के सारे छल-छद्म उजागर हो चुके हैं। मुट्ठीभर मुफ्तखोरों की ज़िन्दगी में चमकते उजाले के बरक्स आमलोगों की ज़िन्दगी का अँधेरा गहराता चला गया है। उन्होंने कहा कि सभी चुनावबाज पार्टियों के साथ ही अपने लक्ष्य से विश्वासघात कर चुकी नकली वामपंथी पार्टियों का गन्दा चेहरा भी नंगा हो चुका है। अब रास्ता सिर्फ एक है विकल्प सिर्फ एक है। हमें भगतसिंह के दिखाये रास्ते पर आगे बढ़ने का संकल्प लेना होगा। इसीलिए हम भारत के नौजवानों का आह्वान करते हैं : **"भगतसिंह की बात सुनो, नई क्रान्ति की राह चुनो।"**

लेखिका कात्यायनी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगतसिंह के विचार क्षितिज पर अनवरत जलती मशाल की तरह हमें दिशा दिखला रहे हैं। अब गाँव-गाँव और शहर-शहर में और तमाम कालेजों-विश्वविद्यालयों में नौजवानों और छात्रों को नये सिरे से अपने क्रान्तिकारी संगठन बनाने होंगे और उन्हें चुनावबाज़ मदारियों के पिछलग्गू बनने से बचना होगा। उन्होंने कहा कि इसके बाद, जैसा कि जेल की कालकोठरी से युवाओं को भेजे गये अपने सन्देश में भगतसिंह ने कहा था, छात्रों-नौजवानों को कारखानों के मज़दूरों और गाँव की झोपड़ियों तक जाना होगा और तमाम मेहनतक़शों को संगठित करना होगा।

सभा का संचालन करते हुए अरुण ने कहा कि यही संदेश लेकर हम इस देश के हर जीवित युवा हृदय तक पहुँचना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि भगतसिंह और उनके साथियों का सपना एक जलता हुआ प्रश्न बनकर हमारी आँखों में झाँक रहा है। उनकी विरासत हमें ललकार रही है और भविष्य हमें आवाज़ दे रहा है। एक ज़िन्दा क़ौम के नौजवान इसकी अनसुनी नहीं कर सकते। अरुण ने कहा कि हम एक नई क्रान्ति की तैयारी के लिए, एक नये क्रान्तिकारी नवजागरण का सन्देश पूरे देश में फैला देने के लिए आपका आह्वान करते हैं।

सभा को नमिता, गीतिका, उदयभान, आदि वक्ताओं ने भी सम्बोधित किया। इसके उपरांत मशाल प्रज्जवलित कर काकोरी स्तम्भ के समक्ष नौजवानों ने शपथ ली कि वे इस मशाल को तबतक जलाये रखेंगे जब तक कि शहीदों का सपना साकार नहीं हो जाता। नौजवानों ने दसो दिशाओं को और उपस्थित जनसमुदाय को साक्षी मानकर शपथ लिया कि वे अन्तिम दम तक मानवता की मुक्ति का यह संघर्ष जारी रखेंगे और तब तक चैन की साँस नहीं लेंगे जब तक वे अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते। इसके बाद एक मशाल जुलूस निकाला गया जो हजरतगंज के विभिन्न मार्गों से होता हुआ विधानसभा के सामने जाकर समाप्त हुआ।

इसके पूर्व इस यात्रा के अन्तर्गत **'भगतसिंह की विरासत और नौजवानों का रास्ता'** विषय पर एक विचारगोष्ठी भी आयोजित की गयी, जिसमें युवाओं ने खुलकर हिस्सा लिया और कुछ इस यात्रा टोली में शामिल भी हुये।

स्मृति संकल्प यात्रा का बैनर और भगतसिंह की तस्वीर लगाये हुए वैन के साथ-साथ नारे लगाता हुआ, नारों की तख्ती लगाये हुए साइकिल पर सवार युवाओं का जत्था लखनऊ की सड़कों पर गुज़रता हुआ अचानक कहीं पर रुकता था, तो बरबस ही लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेता था। नौजवान लड़के-लड़कियों का यह जत्था भगतसिंह कैप, कन्धे से कमर तक की स्मृति संकल्प यात्रा की पट्टी लगाये हुए, अपने हाथ में पर्चे लिये हुए राह चलते राहगिरों को आकर्षित कर लेता था और लोगों के अन्दर उत्सुकता जगा देता था कि इस यात्रा का मकसद क्या है? लोग इन युवाओं से अपनी पहलकदमी लेकर जानना चाहते थे, यात्रा में शामिल लड़के-लड़कियाँ उन्हें इस यात्रा का मकसद बताते थे और बातचीत के लिए अनका पता अपनी डायरियों में नोट करते और नारे लगाते हुए आगे बढ़ जाते थे। उनकी इस यात्रा में उनके साथ भगतसिंह और क्रान्तिकारियों का साहित्य, क्रान्तिकारी गीतों का कैसेट, यात्रा के व्यापक उद्देश्यों से परिचित कराता पर्चा था, जिसकी प्रदर्शनी यात्रा के बीच लगायी जाती थी। इसके साथ ही एक पोस्टर प्रदर्शनी भी लगायी जा रही थी, जिसमें क्रान्तिकारियों के चित्रों के साथ उनके विचारों की कलात्मक प्रस्तुति की गयी थी। यात्रा में मुख्य रूप से अरविन्द, कात्यायनी, कमला पाण्डेय, रामबाबू, नमिता, गीतिका, लालचन्द, शालिनी, स्मृति, प्रमोद, उदयभान, अरुण यादव, विवेक, अरुण, धीरज, प्रशान्त, अवधेश के अतिरिक्त अन्य युवा शामिल थे।

पंजाब के विभिन्न शहरों और गाँवों में स्मृति संकल्प यात्रा की प्रचार टोलियों द्वारा प्रचार अभियान

लुधियाना। स्मृति संकल्प यात्रा के तहत पंजाब में नौजवान भारत सभा की टोलियों ने अलग-अलग इलाकों में प्रचार अभियान चलाये। जालंधर के पास आदमपुर इलाके में नौभास की स्थानीय इकाई ने आदमपुर शहर तथा आस-पास के गाँवों में घर-घर जाकर भगत सिंह और उनके साथियों का क्रान्ति का संदेश पहुँचाया। बड़े पैमाने पर पर्चा वितरण किया गया तथा भगत सिंह और उनके साथियों से सम्बन्धित साहित्य घर-घर पहुँचाया गया।

लुधियाना तथा पखोवाल में नौभास की टोलियों ने लुधियाना शहर तथा आस-पास के गाँवों में घर-घर प्रचार अभियान चलाया गया। लुधियाना बस स्टैण्ड पर बसों में तथा लुधियाना से दिल्ली की ओर जाने वाली ट्रेनों में प्रचार अभियान चलाया गया। इसके अलावा आई.टी.आई. लुधियाना तथा आई.टी.आई. समराला में क्लास मीटिंगें तथा ग्रुप मीटिंगें की गईं। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय तथा गुरू नानक इंजीनियरिंग कॉलेज, लुधियाना, पॉलीटेक्निक, लुधियाना के हॉस्टलों में भी प्रचार अभियान चलाया गया। इन अभियानों के दौरान बड़ी मात्रा में हिन्दी तथा पंजाबी में पर्चा बाँटा गया तथा भगत सिंह और उनके साथियों के विचारों तथा जीवन से सम्बन्धित साहित्य का वितरण किया गया।

जहाँ-जहाँ भी यह प्रचार टोलियाँ गईं वहाँ-वहाँ इन्हें जनता, और ख़ासकर नौजवानों का भारी समर्थन प्राप्त हुआ। कई जगहों पर नौजवानों ने इस मुहिम से जुड़ने और नौभास का सदस्य बनने की इच्छा जाहिर की। प्रचार अभियान के दौरान लोगों को स्मृति संकल्प यात्रा के उद्देश्य के बारे में बताया गया और नौजवानों से अपील की गई कि अगर उनके दिल में भगत सिंह और उनके साथियों के प्रति ज़रा भी सम्मान है, अगर वे आज के हालात से असन्तुष्ट हैं तो देर न करें, फ़ौरन इस मुहिम से जुड़ें और भगत सिंह के सपनों का समाज बनाने में अपना योगदान करें। नागरिकों ने जगह-जगह आश्चर्यमिश्रित हर्ष के साथ प्रचार टोलियों का स्वागत किया और इस प्रयास को सराहा और इसमें हर सम्भव सहायता देने का वायदा किया। यह अभियान यह रिपोर्ट लिखे जाने तक जारी था और पंजाब के नये-नये हिस्सों में चलाया जा रहा था।

लुधियाना में पंजाबी उपन्यास 'सुधार घर' पर दस्तक प्रकाशन द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन

14 मई को पंजाबी भवन, लुधियाना में पंजाबी के नामवर उपन्यासकार मित्रसेन मीत के भारतीय जेलों के बारे में लिखे गये नये उपन्यास 'सुधार घर' पर दस्तक प्रकाशन की ओर से एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी की अध्यक्षता डा. सुरजीत गिल ने की जो पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में शिक्षक हैं। गोष्ठी के आरम्भ में मित्रसेन मीत ने अपने जीवन तथा रचना प्रक्रिया के बारे में एक वक्तव्य रखा। उन्होंने कहा कि उनका जीवन मेहनतकश ग़रीब जनता के बीच गुज़रा है, इसलिए उन्होंने इस जनता की पीड़ा को ही अपने लेखन के जरिये आवाज़ देने की कोशिश की है। उपन्यास के बारे में मुख्य पेपर डा. जोगिन्दर राही का था। यह सज्जन इन दिनों पंजाबी साहित्य जगत में बहुत बड़े विद्वान आलोचक माने जाते हैं। 'सुधार घर' पर उनके द्वारा पढ़ा गया पेपर बहुत ही सतही और नीरस था। यह पेपर गोष्ठी में उपस्थित लोगों को उपन्यास की कहानी सुनाने से आगे नहीं बढ़ा, जोकि श्रोताओं के बड़े हिस्से ने पहले ही पढ़ रखी थी। यह पेपर पढ़े जाने के बाद बहस का आरम्भ हुआ। यह बहस उपन्यास के बारे में पढ़े गये पेपर की बजाय उपन्यास पर ज्यादा केन्द्रित रही। बहस में भाग लेने वालों के दो ग्रुप बन गये। एक ग्रुप उपन्यास के उन प्रशंसकों का था जो बिना किसी भी आलोचना के उपन्यास की तारीफ़ के पुल बाँधे जा रहे थे। इस समूह का प्रतिनिधित्व पंजाबी साहित्य के जाने-माने आलोचक डा. सुखदेव सिरसा (पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़) तथा सुरजीत गिल (माकपा) आदि कर रहे थे।

दूसरा ग्रुप दस्तक प्रकाशन के कार्यकर्ताओं का था। उपन्यास के बारे में इन विचारों का प्रतिनिधित्व साथी कश्मीर, अवतार (भटिण्डा) तथा पंजाबी पत्रिका प्रतिबद्ध के सम्पादक सुखविन्दर ने किया। उपन्यास के बारे में बहस का प्रारम्भ करते हुए अदारा दस्तक की ओर से मुख्य वक्ता साथी कश्मीर ने सबसे पहले उपन्यास के सकारात्मक पक्षों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज जब पंजाबी में औरत-मर्द सम्बन्धों तथा किसानी जीवन पर केन्द्रित ज्यादातर उपन्यास लिखे जा रहे हैं तो ऐसे समय में मीत ने अपने उपन्यास 'सुधार घर' में जेलों जैसा नया और अलग विषय उठाया है। मीत ने भारतीय जेलों के भीतर जीवन तथा न्याय-व्यवस्था की असलियत को नंगा किया है और यह साबित किया है कि न्याय सिर्फ़ धन के जरिये सम्भव है। ग़रीब जनता के लिए इस व्यवस्था में कहीं कोई न्याय नहीं है। उपन्यास की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि यह उपन्यास भारतीय न्याय व्यवस्था तथा जेलों में कुछ कानूनी सुधारों की माँग से आगे नहीं बढ़ता। उन्होंने कहा कि उपन्यास में मज़दूर वर्ग से सम्बन्धित एक भी प्रतिनिधि पात्र नहीं है। उपन्यास के सभी पात्र या तो लम्पट सर्वहारा वर्ग से सम्बन्धित हैं या मध्य वर्ग से हैं। आगे उन्होंने कहा कि उपन्यास में व्यापारी, भ्रष्ट अफ़सर और राजनेता आदि हैं जिनके बीच लूट के माल का बँटवारा होता है पर यह धन आता कहाँ से है, इसकी उपन्यास में झलक मात्र भी नहीं मिलती। उपन्यासकार इस तरह का प्रभाव पैदा करता है कि जैसे मण्डी से ही लाभ पैदा होता हो। वह उत्पादन की प्रक्रिया को छूता तक नहीं है। उन्होंने कहा कि लेखक जेलों को वर्ग-अन्तरविरोधों की उपज के रूप में दिखा सकने में भी असफल रहा है। और वह यह भी नहीं दिखा सका कि उत्पादन सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तनों की बदौलत किस तरह जेलों की समूची व्यवस्था में ही परिवर्तन होते हैं। उन्होंने कहा कि उपन्यास में से द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवादी पद्धति ग़ायब है। इस तरह विचारधारात्मक तौर पर यह उपन्यास प्रगतिशील नहीं बल्कि प्रतिक्रियावादी है। उपन्यास के कलात्मक पक्ष की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इस नज़रिये से भी यह उपन्यास बेहद कमज़ोर है। उपन्यास में पात्रों के वार्तालाप नाममात्र हैं। उपन्यास की कहानी पात्रों के वार्तालाप के जरिये आगे बढ़ाने की बजाय लेखक धक्का मारकर कहानी को आगे बढ़ाने की कोशिश करता नज़र आता है। अन्त में उन्होंने श्रोताओं से ज़ोरदार सिफ़ारिश की कि वह जेलों पर तोलस्तोय द्वारा लिखे गये उपन्यास

'पुनरुत्थान' को ज़रूर पढ़ें। कश्मीर के वक्तव्य के बाद, समूची बहस ही उनके द्वारा रखी गई आलोचना पर केन्द्रित हो गई। बहस को आगे बढ़ाते हुए डा. सुखदेव ने कहा कि यह उपन्यास बेहतर ढंग से भारतीय न्याय व्यवस्था की क्रूरता को नंगा करता है। उन्होंने कहा कि इतना ही काफ़ी है कि यह उपन्यास भारतीय जेल व्यवस्था को नाजायज़ साबित कर देता है। उन्होंने कहा कि उपन्यास में लेखक नहीं बल्कि परिस्थितियों को बोलना चाहिए इसलिए हमें लेखक से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह प्रस्तुत समस्याओं का हल भी बताए। दस्तक की ओर से बहस को आगे बढ़ाते हुए अवतार ने कहा कि अपने बचपन में भले ही लेखक ग़रीब जनता के निकट रहा हो, मगर आज हमारा समाज वहीं नहीं खड़ा है जहाँ 50 साल पहले था। इसलिए जो लेखक पल-पल बदलते यथार्थ को समझ पाने में असफल रहता है वह पिछड़ जाता है। उन्होंने कहा कि वस्तुगत यथार्थ के कलात्मक चित्रण के लिए यह ज़रूरी है कि लेखक के पास सामाजिक बदलाव की दिशा की समझदारी हो। इसलिए उन्होंने उदाहरण दिया कि किस तरह दो अलग-अलग दृष्टिकोणों वाले लेखक टूटती हुई छोटी किसानी की एक ही परिघटना को अलग-अलग तथा एक दूसरे के ठीक उलट पेश करते हैं। एक लेखक किसानी के टूटने पर आँसू बहाता है तो दूसरा इसे एक अपरिहार्य ऐतिहासिक परिघटना के रूप में देखता है। उपन्यास में संघर्ष समिति जो लेखक के पेश करने के मुताबिक 'शोषित-उत्पीड़ित' जनता की ख़ातिर लड़ती है, के बारे में अवतार ने कहा कि संघर्ष समिति चरित्र से प्रगतिशील नहीं कही जा सकती। क्योंकि वह भी सम्पत्ति के मालिक वर्ग की ख़ातिर ही लड़ती है। अवतार के वक्तव्य के बाद डा. सुरजीत ने बहस ने दखल देते हुए कहा कि बहस उपन्यास पर ही केन्द्रित रहनी चाहिए क्योंकि हम यहाँ भारतीय क्रान्ति की लाइन पर बहस करने नहीं आये हैं। ऐसी चर्चा किसी अन्य मंच पर हो सकती है।

इसके बाद **प्रतिबद्ध** के सम्पादक सुखविन्दर ने अपने विचार रखे। डा. सुरजीत के उपरोक्त बयान पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि डा. सुरजीत का यह कहना एकदम सही है कि बहस उपन्यास पर ही केन्द्रित रहनी चाहिए, क्रान्ति की लाइन पर बहस करने का यह मंच नहीं है। सुखविन्दर ने कहा कि हम यहाँ पर ऐसी चर्चा कर भी नहीं रहे, हमारा तो सिर्फ़ इतना ही कहना है कि वस्तुगत यथार्थ की विज्ञानसंगत समझदारी के कोई भी लेखक वस्तुगत यथार्थ का ग़लत, सतही तथा दोयम दर्जे का ही चित्रण कर सकता है। डा. सुखदेव की टिप्पणियों के बारे में सुखविन्दर ने कहा कि उनका कहना सही है कि रचना में लेखक को नहीं बल्कि परिस्थितियों को बोलना चाहिए। और किसी लेखक से यह माँग नहीं करनी चाहिए कि वह वस्तुगत समस्याओं को हल भी पेश करे। सुखविन्दर ने कहा कि कोई भी मार्क्सवादी लेखक से यह माँग नहीं करता कि वह अपनी हर रचना का अन्त इंकलाब ज़िन्दाबाद के नारे से करे। और न ही इस बहस में किसी ने इस तरह की माँग की है। उन्होंने कहा कि लेखक वस्तुगत परिस्थितियों का बयान ही इस तरह से करता है, वह विकासमान तथा ह्रासमान का द्वन्द्व दिखलाता है, जिससे पाठक को सहज ही अनुभूति होती है कि भविष्य किसका है। सुखविन्दर ने कहा कि डा. सुखदेव के बयान के ठीक उलट 'सुधार घर' में परिस्थितियाँ नहीं बल्कि लेखक बोलता है।

उपन्यास के बारे में बोलते हुए सुखविन्दर ने कहा कि पूरे उपन्यास में वर्ग संघर्ष गैर-हाज़िर है। बस आखिर में लेखक ने उपन्यास में 'वर्ग संघर्ष' नाम का शब्द यूँ डाल दिया है जैसे कि कोई दाल और सब्ज़ी में नमक डालना भूल गया हो। लेखक के मुताबिक उपन्यास में 'वर्ग संघर्ष' में 'मेहनतकशों' का पक्ष लेने वाली संघर्ष समिति के वर्गीय आधारों की भी लेखक ने कहीं चर्चा नहीं की है। पूरे उपन्यास में से इस तरह का प्रभाव उभरता है कि जैसे इस देश का कानून तो ठीक है, बस वह ठीक तरह से लागू नहीं हो पाता।

विषय से हटकर उन्होंने यह सवाल उठाया कि क्या वजह है कि मक्सिम गोर्की, हावर्ड फास्ट, जैक लण्डन, बाल्ज़ाक, तोलस्तोय आदि लेखकों की रचनाएँ तो उनके लिखे जाने के सैंकड़ों वर्ष बाद भी पूरी दुनिया में छपती हैं और पढ़ी जाती हैं। जबकि हमारे लेखकों की रचनाएँ लेखकों तथा पाठकों के एक संकीर्ण दायरे तक ही सीमित रह जाती हैं। उन्होंने कहा कि हमें इसके दो कारण समझ आते हैं। पहला कारण यह है कि हमारे लेखक खुद कुछ पढ़ते नहीं हैं, वे कूपमण्डूक हैं। कला-साहित्य-संस्कृति के क्षेत्र में हमारे देश में चिन्तन बहुत कमज़ोर रहा है, जबकि इस क्षेत्र में ज़्यादातर चिन्तन पश्चिम में हुआ है, जिस पर हमारा लेखक विदेशी होने का ठप्पा लगाकर उसे किनारे कर देता है। दूसरा कारण हमें यह समझ में आता है कि हमारे लेखक कबूतरदिल, दुनियादार हैं। गोर्की, बाल्ज़ाक, तोलस्तोय आदि जैसी बहादुरी, सनकीपन उनके जीवन से ग़ायब है। उनके अपने जीवन में वे तमाम बुराइयाँ हैं जिनकी अपनी रचनाओं में वे प्रखर बुराई करते हैं। वे सुरक्षित टापुओं पर बैठकर वर्ग संघर्ष की बातें करते हैं। वे खुद इन संघर्षों के साझीदार नहीं हैं। यही वजह है कि उनकी रचनाओं में न तो ताक़त है और न ही यथार्थ की गर्मी। यही वजह है कि पंजाब के ज़्यादातर लेखकों की किताबें बाइण्डरों के गोदामों में पड़ी सड़ती रहती हैं।

हाज़िरी की दृष्टि से यह गोष्ठी सफल रही। गोष्ठी में शामिल लोगों में बड़ी गिनती युवाओं की थी। मंच संचालक की भूमिका डा. दर्शन खेड़ी ने बखूबी निभायी।

नौजवान भारत सभा द्वारा दिल्ली में दो दिवसीय युवा रचनात्मकता शिविर का आयोजन

17-18 जून, दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के करावलनगर क्षेत्र में नौजवान भारत सभा की दिल्ली इकाई ने दो दिन के युवा रचनात्मकता शिविर का आयोजन किया। इस युवा रचनात्मकता शिविर में पूरे दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अलग-अलग हिस्सों से **नौभास** के लगभग 50 नये कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। यह रचनात्मकता शिविर अब नौभास द्वारा हर साल दो बार (जून और दिसम्बर में) लगाया जाएगा और इसकी मियाद दो दिनों से बढ़ाकर तीन और पाँच दिन की जाएगी।

शिविर के संचालन की भूमिका **नौभास** के संयोजन समिति के सदस्य आशीष ने की। पहले दिन की शुरुआत सुबह 7 बजे हुई। सबसे पहले आशीष ने इस युवा रचनात्मकता शिविर के आयोजन के पीछे की सोच और उद्देश्य पर एक वक्तव्य रखा। आशीष ने कहा कि आज समाज में जो अलगाव है उसका शिकार युवा भी हैं। एक औपचारिकता की दीवार उनके बीच खड़ी है। वे अपने आपको एक इकाई के रूप में महसूस नहीं कर पाते। इस औपचारिकता की दीवार को गिराकर और एक एकता की भावना पैदा करके अलगाव को ख़त्म करना इस शिविर के उद्देश्यों में से एक है। इसके अतिरिक्त अमीर घरों के युवाओं के मनोरंजन और रचनात्मकता के लिए तो समाज में क्लब, खेलकूद सुविधाएँ और प्रशिक्षण संस्थान हैं (जहाँ

ज़्यादातर एक बीमार किस्म का मनोरंजन दिया जाता है जिसमें कोई सामाजिक सरोकार नहीं होता) लेकिन आम मध्यमवर्गीय और ग़रीब युवाओं के मनोरंजन आदि के लिए समाज उन्हें कुछ नहीं देता। ऐसे में युवाओं की रचनात्मकता को मुक्त करने के लिए उन्हें सामाजिक सरोकारों से लैस और स्वस्थ मानवीय भावनाओं को प्रोत्साहित करने वाला मनोरंजन देना ज़रूरी है, जो इस शिविर का एक अन्य लक्ष्य है। इसके अतिरिक्त **सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य** है युवाओं के बीच एक सामूहिकता की भावना पैदा करना, श्रम संस्कृति को पैदा करना, और उनके बीच से अंधविश्वास, अतार्किकता, कर्मकाण्ड आदि जैसी कुप्रवृत्तियों को दूर करना।

इन दो दिनों तक ये सारे नौजवान एक ही छत के नीचे रहे, सामुदायिक रसोई घर चलाया गया, वे साथ-साथ शिविर परिसर की सफ़ाई आदि करते थे और श्रम करते हुए एक-दूसरे से घुलते-मिलते थे।

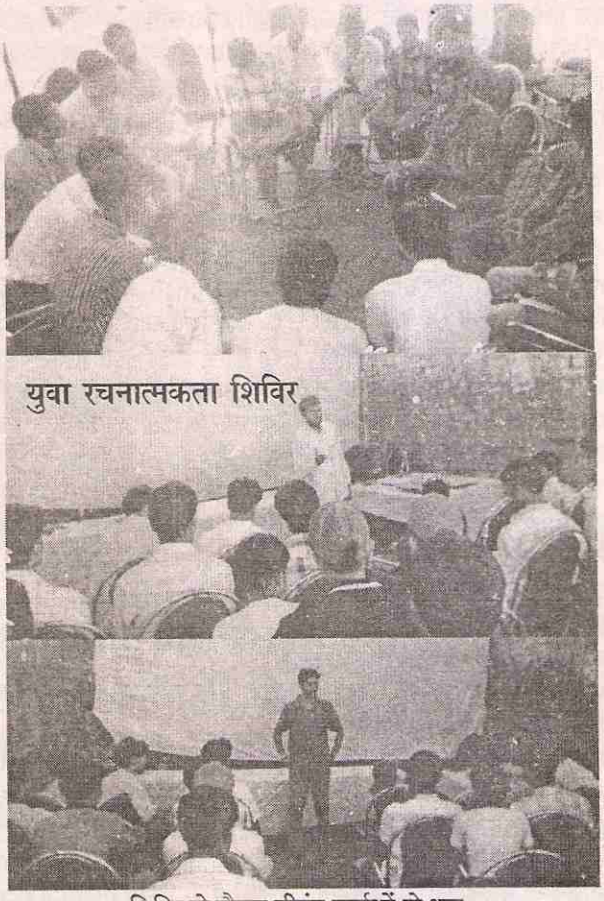

शिविर के दौरान जीवंत चर्चाओं के क्षण

पहले दिन आशीष के वक्तव्य के बाद अतिथि वक्ता के तौर पर दिल्ली विश्वविद्यालय से बुलाये गये **दिशा छात्र संगठन, दिल्ली इकाई** के शैलेश का वक्तव्य हुआ। विषय था – **'सृष्टि का उद्भव और आदमी की कहानी'**। शैलेश ने अपने वक्तव्य में बताया कि यह अंतरिक्ष कैसे जन्मा और विकसित हुआ और पृथ्वी पर मानव जीवन कैसे पैदा और विकसित हुआ। उन्होंने बताया कि इसके पीछे कोई दैवीय शक्ति नहीं है बल्कि प्रकृति के निश्चित गति के नियम हैं। इसके बाद **मुक्त रचनात्मकता सत्र** हुआ जिसमें सभी सदस्यों ने अपने-अपने हुनर का प्रदर्शन किया, जैसे मिमिक्री, नृत्य, गायन, कविता-पाठ, अभिनय, आदि।

इसके बाद **नौभास, दिल्ली इकाई** के सदस्य आशू का वक्तव्य था, जिसका विषय था – **'आज़ादी की कहानी'**। इसमें आशू ने 1857 से लेकर 1947 में आई आज़ादी तक की पूरी यात्रा को सामने रखा और बताया कि आज़ादी के आन्दोलन में वे क्या कमियाँ रहीं जिसके कारण एक रुग्ण, विकृत और विकलांग आज़ादी हमें हासिल हुई। कांग्रेस का चरित्र स्वतंत्रता आन्दोलन में क्या था? गाँधी का मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए? इन सभी सवालों पर आशू ने बहुत ही स्पष्टता के साथ अपनी बात रखी।

इसके बाद **संगीत सत्र** का आयोजन हुआ जिसमें कई क्रान्तिकारी समूह गान किये गये। इससे शिविर में एक समाँ सा बँध गया और लोगों में एक अजीब-सा उत्साह भर गया।

पहले दिन के अंत में **चार्ली चैप्लिन** की प्रसिद्ध फ़िल्म **मॉडर्न टाइम्स** का प्रदर्शन हुआ जिसमें करीब 150 लोग शामिल हुए। इस फ़िल्म में मन्दी के दौर में फैली बेरोज़गारी और पूँजीवाद के उन्नत होने के साथ मज़दूर के यंत्र में तब्दील कर दिये जाने का बेहद शानदार और काव्यात्मक चित्रण किया गया था। इसके बाद इस फ़िल्म पर एक खुली चर्चा का आयोजन हुआ जिसमें लोगों ने खुल कर भाग लिया।

दूसरे दिन की शुरुआत **दिशा छात्र संगठन** के संयोजक अभिनव के वक्तव्य से हुई। अभिनव के वक्तव्य का विषय था – **समाज प्रगति कैसे करता है?** इस विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि समाज के विकास की प्रक्रिया को दो तरह से समझा जा सकता है – आगमनात्मक और निगमानात्मक। आगमनात्मक तरीके से देखें तो हम पाते हैं कि मानव समाज इस प्रकृति का ही विस्तार है। और अगर प्रकृति के कुछ गति के नियम हैं तो मानव समाज की गति के भी कुछ नियम अवश्य होंगे। अगर निगमनात्मक पद्धति से सोचें तो भी हम पाते हैं कि विश्व भर में विभिन्न समाजों के विकास की मंज़िलें, जब उनका आपस में कोई सम्पर्क नहीं था तब भी, कमोबेश एक ही थीं। क्या वजह है कि हर जगह समाज आदिम अवस्था, दास समाज, सामन्ती समाज, पूँजीवाद की मंज़िलों से होकर ही गुज़रा? यानी कोई न कोई नियम ज़रूर हैं जो समाज की गति को नियंत्रित करते हैं। आगे अभिनव ने उदाहरणों और मिसालों से यह प्रदर्शित किया कि समाज के गति के नियम सुनिश्चित हैं। इसके बाद उन्होंने कहा कि अगर समाज की गति के निश्चित नियम हैं तो इतिहास का अध्ययन करके आगे की मंज़िलों को समझा जा सकता है और उन्हें और निकट लाने के लिए संघर्ष किया जा सकता है। और यही नौजवानों का सबसे महत्वपूर्ण कार्यभार होना चाहिए कि वे समाज को समझें और उसे विकास की अगली मंज़िल में ले जाने के लिए एकजुट हों, मेहनतकशों को एकजुट करें और इंकलाब के रास्ते पर चलें; यही भगत सिंह का रास्ता था।

इसके बाद **'क्या जनसंख्या बढ़ती ग़रीबी और बेरोज़गारी का कारण है?'** विषय पर सामूहिक विचार-विमर्श चक्र चलाया गया। जिसमें यह बात उभरकर सामने आयी कि जनसंख्या इन सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का कारण नहीं है। जिस देश में प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक और मानव संसाधन हों उसमें बेरोज़गारी या ग़रीबी होने की कोई वजह नहीं है। क्योंकि विकास और रोज़गार तभी पैदा होता है जब इन दो प्रकार के संसाधनों को मिला दिया जाता है।

(पेज 21 पर जारी)

किए जाने की ज़रूरत है; और मैं जानती हूँ कि तुम उसके लिए चेचक, खुजली, डिप्थीरिया, हड्डी-क्षय, हृदय रोग और क्षय रोग जैसी बीमारियाँ कहाँ से ला सकती हो, और—अरे, प्यारी अम्मा तुम बेहोश हो गयी! मैं दौड़कर मदद के लिए जाती हूँ। अब इस गर्म मौसम में शहर में रहने का *यह* फल मिला।"

अध्याय - 2

मनुष्य की रचना

अम्मा – ढीठ बच्ची, क्या तुम अभी भी उस अधम नीच होलिस्टर से मिलती रहती हो?

बेस्सी – अम्मा, वह बहुत दिलचस्प हैं, हालाँकि थोड़े-से बदमाश हैं, और मैं दिलचस्प लोगों को पसन्द करने से खुद को रोक नहीं पाती। हमारे बीच यह बातचीत हुई :

होलिस्टर – बेस्सी, फर्ज करो कि तुमने थोड़ा मांस, थोड़ी हड्डी और रोएँ लिए, और उसे एक बिल्ली बनाई और उसे कहा कि अब तुम किसी जीव के प्रति निर्दयी नहीं रहोगे, वरना तुम्हें सज़ा और मौत दी जाएगी। और मान लो कि बिल्ली ने इस आदेश का पालन नहीं किया, एक चूहे को पकड़कर तड़पाया और उसे मार दिया। तुम उस बिल्ली के साथ क्या करोगी?

बेस्सी – कुछ नहीं।

होलिस्टर – क्यों?

बेस्सी – क्योंकि मैं जानती हूँ कि बिल्ली क्या कहेगी वह कहेगी यह तो मेरा स्वभाव है। मैं इसमें कुछ नहीं कर सकती; मैंने अपना स्वभाव नहीं बनाया है, *तुमने* बनाया है। इसलिए मैंने जो किया है उसके लिए तुम ज़िम्मेदार हो—मैं नहीं। मैं इसका जवाब नहीं दे सकती, मि. होलिस्टर।

होलिस्टर – फ्रैंकेस्टाइन और उसके दैत्य के साथ भी यही मामला है।

बेस्सी – वह क्या है?

होलिस्टर – फ्रैंकेस्टाइन ने थोड़ा मांस, हड्डी और खून लिया और उससे एक आदमी बना दिया; वह आदमी भाग गया और हर जगह बलात्कार, डकैती और खून करता घूमने लगा। फ्रैंकेस्टाइन भयाक्रान्त हो गया और उसने निराशा में कहा, '*मैंने* उसे बनाया, बिना उसकी सहमति लिये, और इस तरह वह जो भी अपराध करता है उसका ज़िम्मेदार *मैं* हूँ। अपराधी *मैं* हूँ, वह बेकसूर है।'

बेस्सी – निश्चित रूप से वह सही था।

होलिस्टर – मेरा नतीजा भी यही है। यही बात ईश्वर और मनुष्य के लिए और तुम्हारे और बिल्ली के लिए भी सही है।

बेस्सी – ऐसा कैसे?

होलिस्टर – ईश्वर ने मनुष्य को बिना उसकी सहमति के बनाया और उसका स्वभाव भी बनाया; उसको फ़रिश्तों जैसा बनाने की बजाय दुष्ट बनाया और फिर कहा, 'फ़रिश्तों-सा बनो, वरना मैं तुम्हें सज़ा दूँगा और तबाह कर डालूँगा। लेकिन इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, चाहे जो हो, आदमी जो भी करता है,

(पेज 33 पर जारी)

युवा रचनात्मता शिविर का आयोजन

(पेज 32 से जारी)

लेकिन आज देश में मनुष्य और प्रकृति के बीच में मुनाफ़े की दीवार खड़ी है। मज़दूरों से 14-18 घण्टे काम कराया जाता है। अगर उनसे 6-6 घण्टा काम लिया जाय तो रोज़गार के अवसर तिगुने हो जाते हैं। विकास कार्यों की इस देश में इतनी सम्भावनाएँ हैं; अगर इस काम को हाथ में लिया जाय तो रोज़गार भारी मात्रा में पैदा हो सकते हैं। लेकिन एक पूँजीवादी व्यवस्था में इन कामों में लाभ न होने के कारण और पूँजी निवेश विकास की पूर्वशर्त होने के कारण ये काम नहीं होते; नतीजा—न विकास होता है और न ही रोज़गार पैदा होते हैं।

इस सामूहिक विचार-विमर्श चक्र के बाद एक सामूहिक अध्ययन चक्र शुरू हुआ जिसमें भगत सिंह व भगवती चरण बोहरा द्वारा लिखित **नौजवान भारत सभा, लाहौर का घोषणापत्र** का सामूहिक अध्ययन किया गया।

फिर एक खेल खेला गया जिसमें पर्चियाँ बनाकर वितरित कर दी गईं। हर पर्ची में कोई न कोई दिलचस्प और मज़ेदार गतिविधि दर्ज थी। जिसकी पर्ची में जो लिखा था उसे वह करके दिखाना था। इस खेल का सभी ने खूब आनन्द उठाया।

इसके बाद **नौभास** के प्रसेन का वक्तव्य हुआ जिसका विषय था – **नौजवान और सामाजिक रूढ़ियाँ**। प्रसेन ने अपनी बात रखते हुए कहा कि आज कूपमण्डूकता, अंधविश्वास और सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने में नौजवानों को पहल लेनी होगी और मिसाल कायम करनी होगी। प्रसेन ने राहुल सांकृत्यायन के उस उद्धरण की याद दिलायी जिसमें उन्होंने कहा है आज बाह्य क्रान्ति से अधिक आवश्यकता मानसिक क्रान्ति की है और हमें अपने दोनों हाथों में तर्क की तलवार नचाते हुए सामाजिक रूढ़ियों और कूपमण्डूकता के बन्धनों को काट डालना होगा और तभी इस समाज का उत्थान होगा। प्रसेन ने कहा कि हमें तार्किकता के प्रचार-प्रसार पर भी पर्याप्त ज़ोर देना होगा।

इसके बाद **मैजिक शो** हुआ जिसमें पवन और योगेश ने ढोंगी बाबा बनकर दिखलाया कि तथाकथित बाबा और सन्त लोगों को कैसे बेवकूफ बनाते हैं। उन्होंने ऐसी कई तरकीबें दिखलाईं और उनके पीछे का तर्क दिखलाया, जैसे, कपड़े में मंत्र पढ़कर आग लगाना, नारियल में आग लगाना, रस्सी को सीधा हवा में टाँगना, जीभ से सरिया आर-पार करना, आदि।

इसके बाद रूसी क्रान्ति पर बनी फिल्म **वे दस दिन जब दुनिया हिल उठी** का प्रदर्शन किया गया। इसमें रूसी क्रान्ति के पूरे इतिहास को दिखलाया गया था और विश्व इतिहास में उसके महत्व को समझाया गया था।

इसके बाद समूहगान हुआ और फिर एक **मशाल जुलूस** निकाला गया जिसमें करीब 100 लोग मशालों के साथ करावल नगर क्षेत्र के विभिन्न मुहल्लों में गये और भगत सिंह के संकल्प को ताजा करने की शपथ ली गई और यह कसम खाई गई कि हम तब तक संघर्ष करते रहेंगे जब तक भगत सिंह और उनके साथियों के सपनों के भारत का निर्माण नहीं कर लेते।

इसके बाद रात में शिविर स्थल पर 1 बजे से **दि लीजेण्ड ऑफ़ भगत सिंह** नामक फिल्म का प्रदर्शन हुआ और शपथ ग्रहण के साथ शिविर का समापन हुआ।